# ''शापो से मुक्ति''

## ''इस पुस्तक के लिखने का उद्देश्य''

गरीबी, बीमारी, अत्याचार, कर्जा, पैसे की तंगी, अन्याय, जादू टोना, दुख, तकलीफ, नशा, हिंसा, मानसिक तनाव, मौत का भय और अन्य हजार तरह की व्याधियां घर–घर में हैं। आपको समझ नहीं आता कि आपके जीवन की समस्याओं का हल कहां है ? आपने अपना सारा पैसा, ताकत और परिवार की संपत्ति विभिन्न तरह के शापों से निकलने में खर्च हो जाती हैं परन्तु फिर भी कोई भी निदान नहीं निकला। भविष्य की चिंता और भय आपको लगातार खाता है और आपको समझ नहीं आता कि क्या करें। पिछले 30 साल में हमारे देश में यह विचारधारा आ गयी है कि मेरे पास बस पैसा हो जाये, सबकुछ ठीक हो जायेगा। आप बीमारियों के नाम, डाक्टर की भाषा सुबह से शाम बोलते हैं, जो कुछ भी आप करते हैं, वह सफल नहीं होता। शापों की श्रृंखला कभी समाप्त नहीं होती ?

प्रिय दोस्तों हर शाप से मुक्ति बाइबल नामक पुस्तक में उपलब्ध है, यह केवल इसाई समाज के लिए ही नहीं लिखी गयी वरन् विश्व के हर पुरुष और स्त्री के लिए लिखी गयी है – इस पुस्तक की प्रेरणा उस जीवित परमेश्वर के मुख से निकली है जिसने मुझे और आपको बनाया है, वह हमारे ढांचे को जानता है और क्योंकि हम उसकी रचना और सन्तान हैं, वह हमें प्रेम करता है। केवल वही मुझे और आप को हर शाप से मुक्त कर सकता है – बाइबल के नये नियम में गलतियों की पुस्तक के 3 अध्याय के 13वें पद में परमेश्वर की वाणी यह कहती है –

''यिशु मसीह ने हमें व्यवस्था के हर शाप से छुड़ाया है क्योंकि वह हमारे लिए शापित हुआ, (यह लिखा है कि शापित होता है वह व्यक्ति जो सूली पर

टांगा जाता है), जिससे अब्राहम का आशीर्वाद हम अन्य जातियों के लोगों पर आ जाये, और हम विश्वास के द्वारा परमेश्वर के हमारे लिये दिये हुए वायदों को पा सकें। प्रिय बहनों और भाईयों यह वायदे इसराइल के लोगों के अगुवा अब्राहम को दिये गये थे परन्तु प्रभु यिशु मसीह के द्वारा यह वायदे मुझे और आप को हर शाप से मुक्त करा सकते हैं अगर हम उस पर विश्वास करना आरम्भ कर दें।

विश्व को चलाने के लिए परमेश्वर या शैतान, उजाला या अंधकार दो ही ताकते हैं, और अगर आप यिशु मसीह को अपना मुक्तिदाता मानकर परमेश्वर के खेमे में आ जाते हैं तो आपको अंधकार या शैतान की ताकत प्रभावित नहीं कर पायेगी और धोखा देने वाला, झूठा और मनुष्य जाति को शापों में रखने वाला शैतान आपके जीवन से भागना आरम्भ कर देगा।

1 यूहन्ना 3 : 8 'अगर आप लगातार पाप करते रहेंगे तो यह बताता है कि आप शैतान के प्रवृत्ति से प्रभावित हैं क्योंकि वह आरम्भ से ही पाप करता आया है, परमेश्वर के पुत्र यिशु मसीह इसलिए आया कि वह शैतान के कामों का नाश कर सके''।

शैतान की बात मानने से शाप ही शाप आते हैं जबकि आरम्भ में यह आशीर्वाद लगते हैं।

प्रिय दोस्तों –

आज से 2000 वर्ष पर विश्व के बिल्कुल मध्य में एक देश जिसका नाम इसराइल है, दुनिया का उद्धारकर्ता पैदा हुआ था जिसका नाम यिशु मसीह है, वह इस दुनिया में कोई नया धर्म स्थपित करने नहीं आया परन्तु मुझे और आपको हर शाप से मुक्त करने आया। क्योंकि भारत में यह ज्ञान सही तरीके से समझा  नहीं गया इसलिए हमारे जीवन का अंधकार और शाप कभी खत्म ही नहीं होते।

बाइबल में लिखे परमेश्वर के वचन के अनुसार विश्वास के द्वारा हम उसके दिये हुए वायदों को प्राप्त कर सकते हैं। अज्ञानता, अकड़, रूढ़िवादी विचारधारा का अनुसरण मुझे और आपको जीवन के उन अभूतपूर्व आशीर्वादों से वंचित रख सकता है जिसके लिए यिशु मसीह ने अपना बलिदान दिया है। अगर आप परमेश्वर के वचन के अनुसार सुख, शान्ति, समृद्धि, चंगाई और हर एक शाप से मुक्ति चाहते हैं तो अपने हृदय से अपने पापों का प्रायश्चित करें और प्रभु यिशु मसीह को अपना मुक्तिदाता स्वीकार करें और उस पर विश्वास करना आरम्भ कर दें। ऐसा करने से आप परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर जायेंगे और उसके सब वायदे आपके हो जायेंगे। शापों से मुक्ति के लिए आपको परमेश्वर के उन वायदों को अपनी जबान से उच्चारण करके, हृदय में विश्वास स्थापित करके और दूसरों को क्षमा करने की प्रवृत्ति से आप चमत्कारों का अनुभव करने लग जायेंगे और गरीबी, बीमारी, दुख, तकलीफ और हर एक शाप से मुक्त हो जायेंगे। क्योंकि परमेश्वर आपकी जीवन यात्रा में आपके साथ आ जायेगा और आप सफलता प्राप्त करेंगे।

इस पुस्तक में विशेष परिस्थितियों में अध्ययन के लिए परमेश्वर का वचन है। मुख से उच्चारण करने, हृदय में विश्वास और क्षमा करके आपके जीवन में चमत्कार संभव है।

## ''गरीबी, पैसे की तंगी और कर्जे से निकलने के लिए परमेश्वर के वचन से वायदे''

प्रिय दोस्तों !

गरीबी, पैसे की तंगी और कर्जा शाप है। बाइबल का परमेश्वर जिसका नाम अल शदाई है, का अर्थ है, ''आवश्यकता से अधिक देने वाला'' – क्योंकि वह मनुष्य को धन कमाने और संपन्न बनाने की क्षमता रखता है। अगर कोई इस ज्ञान से वंचित होने के कारण बेईमानी, रिश्वत, हेरा–फेरी, चोरी, अन्याय और विभिन्न कुरीतियों के द्वारा धन कमाता है और समझता है कि अब मेरे पास पैसा है, मुझे किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है। तो वह नहीं जानता कि ऐसा पैसा न केवल जीते जी दुख देगा, वरन् मरने के बाद उसे हमेशा के लिए नरक का नागरिक बना देगा। परमेश्वर ने आपको विवेक दिया है और वह आपका निरन्तर मार्गदर्शन करेगा कि क्या गलत या क्या सही है। अगर आप गलत ढंग से पैसा कमाते हैं तो जीते जी प्रायश्चित करके अपने जीवन की दिशा को परिवर्तित कर सकते हैं। आप सुकून या शान्ति का जीवन व्यतीत कर सकते हैं और प्रभु यिशु मसीह पर विश्वास करने से मरने के उपरान्त स्वर्ग के नागरिक बन सकते हैं। बेईमानी का पैसा आपको थोड़े समय की सुरक्षा और आनन्द अवश्य देगा परन्तु आप अपनी आत्मा हमेशा के लिए गवां बैठेंगे।

हमने आपके लिए बाइबल से विभिन्न पद संकलित किये हैं जिससे आप कर्ज, गरीबी, पैसे की तंगी और हर तरह के आर्थिक शाप से मुक्त हो सकें। अगर आप परमेश्वर के इन वचनों को ऊँचा–ऊँचा बोलेंगे तो आपके अपने हृदय में विश्वास उत्पन्न होगा और दूसरों को क्षमा करने से आपकी आर्थिक स्थिति सुधर जायेगी। यह परमेश्वर के वचन के अनुसार होगा न कि किसी मनुष्य की शिक्षा के आधार पर। आप स्वयं भी बाइबल की एक प्रति अपनी भाषा में

खरीदकर इन वायदों और इसके अतिरिक्त वायदों को ढूंढ कर उन्हें अपने जीवन में कार्यान्वित करके आर्थिक लाभ उठा सकते हैं। बाइबल कहती है कि परमेश्वर का वचन मेरे जीवन में उजियाला लाता है। दोस्तों आर्थिक शापो में रहने की कोई आवश्यकता नहीं, जब आप आशीर्वाद पा सकते हैं।

1. 'नितिवचन 10 : 22 – परमेश्वर के आशीर्वाद मनुष्य को धनी बनाते हैं। और धनी होने के साथ उसे बहुत से दुखों का अनुभव नहीं करना पड़ता।'
2. 'नितिवचन 24 : 4 – पापी व्यक्ति का धन उस व्यक्ति के लिए संचित किया जाता है जो धार्मिक और परमेश्वर का भय मानता है।'
3. 'भजनसंहिता 34 : 10 – जवान सिहों की तो कमी हो सकती है और व भूखे रह सकते हैं परन्तु जो परमेश्वर को निरन्तर खोजते हैं, उन्हें किसी भी वस्तु की घटी नहीं होगी।'
4. 'व्यवस्थाविवरण 24 : 4 – परमेश्वर तुम्हारे भंडारों को और तुम्हारे हाथ के हर कामों पर आशीष देगा और जिस भी जमीन पर आप रहते हो, आपकी बढ़ोत्तरी देगा।'
5. 'मलाकी 3 : 10–12 'अपनी आमदनी का दसवां हिस्सा मेरे भवन में लाओ, जिससे मेरे घर में भोजन हो और ऐसा करने के बाद बेशक मेरी परीक्षा लो, सेनाओं का परमेश्वर यह कहता है, मैं तुम्हारे लिए स्वर्ग की खिड़कियां खोलूंगा और आशीर्वादों की झड़ी लगाऊंगा, जिससे तुम्हें उसको रखने का स्थान कम पड़ जायेगा। परमेश्वर जो सेनाओं का प्रभु है यह कहता है कि मैं तेरी संपन्नता को लूटने वाले लुटेरों को झिड़कूँगा और अंगूर का पेड़ फल देने से नहीं रुकेगा।'
6. 'युहन्ना 3 : 2 – 'प्रिय मैं यह प्रार्थना करता हूं कि तुम हर परिस्थिति में आर्थिक उन्नति करो जैसे स्वास्थ्य और आत्मा में करते हो।''

7. 'फिलिप्पियों 4 : 19 – 'मेरा परमेश्वर मेरी हर आवश्यकता को अपने धन, संपन्नता और महिमा के द्वारा पूरा करेगा।'

8. 'भजनसंहिता 1 :1–3 – 'धन्य है व मनुष्य जो दुष्ट की सलाह पर न ही चलता है, न पापियों की संगति में बैठता है, परन्तु वह निरन्तर दिन–रात परमेश्वर के वचनों को सुनकर और पढ़कर आनन्दित होता है। वह एक ऐसे पेड़ के समान है जो पानी की नदी के द्वारा सींचा जाता है, जिसकी पत्तियाँ कभी नहीं मुरझातीं और, वह जो कुछ भी करता है, सफल होता है।''

9. 'यहोशू 1 : 8 – ''व्यवस्था की यह पुस्तक के वचन तेरे मुख से हमेशा निकलें और इन पर निरन्तर मनन करने और उन्हें कार्यान्वित करने से तुझे जीवन के हर क्षेत्र में सफलता मिलेगी और तू पूरी रीति से कामयाब होगा।''

10. 'भजनसंहिता 35 : 26 – ''परमेश्वर की प्रशंसा निरन्तर हो क्योंकि वह अपने दास की संपन्नता से प्रसन्न होता है।''

11. 'उत्पत्ति 26 : 12–14 – ''तब इसाक ने उस जमीन में बीज बोया और उसकी सौ गुनी बढोत्तरी हुई और परमेश्वर ने उसे आशीष दी। उसका सम्पन्न होना आरंभ होता गया जब तक वह बहुत अधिक धनी हो गया। उसके पास मवेशी, पशु, नौकर–चाकर हो गये और फिलिस्तीन के लोग उससे ईष्या करने लगे।

12. 'उत्पत्ति 24 : 35 – ''परमेश्वर ने मेरे मालिक को बहुत अधिक आशीषें दी हैं, उसको पशु, मवेशी, चांदी, सोना, पुरुष और महिला नौकर, ऊँट और गधे इत्यादि दिये हैं और मेरे मालिक की पत्नी को उसने बूढ़ी उमर में सन्तान भी दी हैं।

13. 'अय्यूब 42 : 12 – ''तब परमेश्वर ने जॉब के अन्तिम दिनों को पहले के दिनों से भी अधिक आशीषें दी, क्योंकि उसके पास 14000 भेढ़ें, 6000 ऊँट, 1000 जोड़े बैल और 1000 मादा गधे थे।

आप स्वयं भी बाइबल से अन्य दृष्टान्तों को ढूंढ सकते हैं जो संपन्नता और धन से संबंधित हैं और परमेश्वर को प्रार्थना के द्वारा उसके वायदे अपने जीवन में ला सकते हैं।

# ''शापो से मुक्ति''

# ''बीमारी (सामान्य और लाइलाज)''

''परमेश्वर के पुत्र यिशु मसीह ने सूली पर जाकर मनुष्य जाति की सारी बीमारियों का शाप अपने सिर पर ले लिया।'' बीमारी का इलाज डाक्टर के द्वारा तथा प्रार्थना दोनों के द्वारा संभव है। परन्तु आपके विश्वास के अनुसार ही आपको चंगाई मिलेगी, किसी दूसरे व्यक्ति का विश्वास आपके लिए काम नहीं करेगा। बाइबल में एक स्त्री की कहानी है जिसने यिशु मसीह के दामन को विश्वास के द्वारा भरी भीड़ में छुआ था और चंगी हो गई थी, दो अंधे व्यक्ति से जब यिशु मसीह ने पूछा कि क्या आप विश्वास करते हैं कि आप अपनी दृष्टि पा लोगे, तो उन्होंने यिशु को जवाब दिया, हां प्रभु ! जायरस नाम का व्यक्ति जो धार्मिक स्थान का नेता था, यिशु मसीह को अपने घर लेने के लिए आया और अपनी मरी हुई बेटी को जिलाने की प्रार्थना की। प्रभु यिशु मसीह ने कहा, केवल विश्वास कर और उन्होंने जायरस की पुत्री को मुर्दों से जिन्दा कर दिया। बाइबल का परमेश्वर न बदलने वाला कल, आज और हमेशा एक जैसा है। अगर आप विश्वास करते हुए प्रभु यिशु मसीह के नाम से स्वयं प्रार्थना करेंगे या करवायेंगे तो आपके विश्वास के अनुसार आप चंगे हो जायेंगे।

आपको दुनिया भर की बीमारियों और दवाइयों के नाम जानने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु परमेश्वर के वचन का मुख से उच्चारण, आपके हृदय में विश्वास लायेगा और क्षमा कर देने से बीमारी से चंगाई का चमत्कार हो जायेगा– परन्तु क्या आपने अपने पापों की क्षमा प्रभु यिशु मसीह से मांगी है, क्या आपने उसको अपना मुक्तिदाता स्वीकार किया है, क्या आप विश्वास करते हैं कि वह परमेश्वर का पुत्र है और वह मारा गया, गाड़ा गया और तीन दिनों के

बाद मुर्दों से जिंदा हो उठा है और अब परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर बैठा है और सारी दुनिया का न्याय करने के लिए एक दिन आयेगा।

बाइबल का विश्वास देखने से पहले करना पड़ता है – आप विश्वास इसलिए करते हैं कि परमेश्वर ने आपकी चंगाई के बारे में अपने वचन में कहा है – और कई बार यह चंगाई तुरन्त हो जायेगी, कई बार समय लगेगा। परन्तु आपके विश्वास के अनुसार ही आपके लिए किया जायेगा।

1. ''निर्गमन 15 : 26 – ''अगर तुम ध्यान से मेरी आवाज़ को सुनोगे और उस बात को करोगे जो परमेश्वर की दृष्टि में सही है और उसकी हर आज्ञा और विधियों की मानोगे तो मैं तुम्हारे ऊपर कोई भी बीमारी नहीं लाऊंगा, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ जो तुम्हें चंगा करता हूँ।''
2. ''व्यवस्थाविवरण 7 : 14–15 – ''तुम हर जाति से अधिक आशीष पाओगे और तुम्हारे बीच में कोई भी नारी, मनुष्य और पशु बांझ नहीं होगा और परमेश्वर तुम्हारे बीच से हर बीमारी को ले लेगा और मिस्त्र की कोई भी भयानक बीमारियाँ जो तुमने जानी हैं तुम्हारे ऊपर नहीं आयेंगी, परन्तु यह बीमारियाँ तुम्हारे शत्रु पर आयेंगी।
3. ''भजनसंहिता 103 : 1–3 – ''हे मेरे मन यहोवा को धन्य कहो और जो कुछ मेरे अन्दर है उसके पवित्र नाम को धन्य कहो – हे मेरे मन यहोवा को धन्य कहो और उसके उपकारों को मत भूलो, वह तो तेरे सारे पापों को क्षमा करता है और तेरी सारी बीमारियों को चंगा करता है।
4. ''यशायह 53 4 : 6 – यह अवश्य है, कि उसने हमारे सारे दुखों को अपने ऊपर ले लिया और हमारे हर दर्द को उठा लिया, तो भी हमने उसे दुख सहने वाला माना। हमने यह सोचा कि प्रभु ने उसे तकलीफ और दुख दिया है। परन्तु उसने हमारे पापों के कारण यह सजा पायी, और हमारी

शान्ति के लिए उसे दंड दिया गया और उसके घावों के द्वारा हमें चंगाई मिली।''

5. ''मत्ती 11 : 5 – ''अंधे देखते हैं और लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी साफ हो जाते हैं, बहरे सुनते हैं और मुर्दे जिंदा हो जाते हैं और गरीबों को सुसमचार का प्रचार किया जा रहा है।''

6. ''मरकुस 16 : 17–18 – ''और यह चिन्ह उनके विश्वास करने के कारण होंगे, मेरे नाम से वह दुष्ट आत्माओं को निकालेंगे और अन्य भाषाओं में बोलेंगे। सांप का विष उन पर प्रभाव नहीं करेगा और अगर वह कोई भयानक विष भी पियेंगे तो उन्हें नुकसान नहीं करेगा, वह बीमार लोगों पर हाथ रखेंगे और वह चंगे हो जायेंगे।

7. ''प्रेरितों के काम 10 : 38 – ''किस तरह से परमेश्वर ने नाजरथ के यिशु को अभिषेक दिया कि वह पवित्र आत्मा से और परमेश्वर की सामर्थ से भरा हुआ था और वह लोगों को चंगा करता तथा दुष्टआत्माओं से प्रभावित सभी को मुक्त करता गया और सब स्थान पर उसने अच्छाई की।

8. ''प्रेरितो के काम 5 : 14 – 15 – और विश्वासियों की बढ़ोत्तरी निरन्तर होती रही और बहुत से पुरुष और स्त्रियां विश्वास में आते रहें, और उन्होंने सब बीमारों को सड़कों पर ले आये और बिस्तरों तथा पलंगों पर उन्होंने रखा, जिससे पतरस के शरीर की छाया भी उन के ऊपर पड़े और वह चंगे हो जायें। इसके अतिरिक्त बहुत सारे लोग आसपास के नगरों से एकत्रित हुए, जो बीमार और दुष्ट आत्माओं से ग्रसित लोग थे और उन सबने चंगाई पाई।

9. ''प्रेरितों के काम 3 : 16 ''और उसके नाम (यिशु मसीह) से यह लंगड़ा आदमी ताकतवर हो गया है और विश्वास के द्वारा वह पूरी तरह से तन्दुरुस्त सबकी आंखों के सामने हुआ है।

10. ''प्रेरितों के काम 19 : 11–12 – ''अब परमेश्वर ने पैल्स के हाथ के द्वारा अद्भुत आश्चर्यकर्म किये, यहां तक कि जो रुमाल और दूसरे कपड़े उसने स्पर्श किये, बीमारों के छूने से चंगे हो गये और उनमें से दुष्ट आत्माएं से निकल गई।

11. ''मरक्स 3 : 14–15 – ''तब उसने 12 की चुना जिससे वह उन्हें प्रचार करने भेजे और उसने उनको बीमारियों को चंगा करने और दुष्ट आत्माओं को निकालने की सामर्थ दी।

12. प्रकाशित वाक्य 22 : 1–2 – ''और उसने मुझे जीवन की एक साफ नदी दिखायी, जैसे क्रिस्टल जैसा पारदर्शक काँच होता है, जो परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से निकलती है। सड़कों के बीचो–बीच और नदी के दोनों ओर जीवन का वृक्ष था जो 12 फलों के वृक्षों से सुसज्जित था और जिसका हर एक पेड़ हर महीने फल देगा। इन पेड़ों की पत्तियों देशों की चंगाई के लिए थी।''

इसके अतिरिक्त चंगाई से संबंधित बाइबल से और भी वायदे और दृष्टान्त आप दृढ़ सकते हैं और अपने जीवन में कार्यान्वित करके स्वास्थ्य लाभ और चंगाई पा सकते हैं।''

# ''शापो से मुक्ति''

## ''अशान्ति, जादू–टोना, मानसिक समस्यायें''

भारत में विभिन्न तरह के पारिवारिक और आर्थिक ईर्ष्या और द्वेष के कारण लोग एक दूसरे के घरों और व्यापारों को उजाड़ते हैं, अशान्ति और मानसिक बीमारी फैलाते हैं और विभिन्न तरह के जादुओं, टोने, तान्त्रिक और नाशपूर्वक क्रियाओं को करते हैं और अन्त में मानसिक तनाव के कारण लोग मर जाते हैं और परिवार नाश हो जाते हैं। बहुत से लोग शैतान या अन्धकार की ताकतों के द्वारा दुष्ट–आत्माओं से संपर्क करते हैं – परन्तु बाइबल का परमेश्वर इन सब परिस्थितियों में हस्तक्षेप कर सकता है और आपको पूर्ण रूप से स्वतंत्र कर सकता है। परन्तु वह आप से सहयोग की मांग करता है – अगर आप अपने पाप से क्षमा मांगें, प्रभु यिशु को अपना मुक्तिदाता स्वीकार करेंगे और पूर्ण रीति से अपना जीवन प्रभु यिशु को समर्पित कर देंगे तथा अन्य विचारधारा जो शैतान के राज्य से संचालित है, से पूरी तरह से निकल आयेंगे तो आप आज़ाद हो जायेंगे।

दुष्ट–आत्मा प्रभु यिशु मसीह के सामने नहीं रुक सकेगी – यिशु मसीह ने हर विश्वासी को दुष्ट–आत्माओं को निकलने की सामर्थ्य दी है – परन्तु आप स्वयं यिशु के लहु की सुरक्षा के नीचे आकर, उसके वचन की निरन्तर उच्चारण करके, हृदय में विश्वास स्थापित करके और क्षमा करके अपने आप को मुक्त कर सकते हैं। परन्तु अगर आपने दुष्ट–आत्माओं के साथ खिलवाड़ किया है, शैतान की पूजा की है और अन्धकार की ताकतों को अपने जीवन में आमन्त्रित किया है तो दुष्ट–आत्मा आपको जकड़ कर बैठी रहेगी और आसानी से नहीं जायेगी। कई बार इसके लिए आपको व्रत भी रखना पड़ेगा या ऐसे चर्च में जाना पड़ेगा जो दुष्ट–आत्माओं को निकालने में माहिर हैं।

बाइबल का परमेश्वर किसी मनुष्य या परिवार का नाश करने नहीं आया, वरन् बचाने आया है। यिशु की अज्ञानता के कारण बहुत से लोग एक के बाद एक बुरी आत्मा के साथ खिलवाड़ करते हैं और शैतान की जकड़ उन पर प्रभावशाली होती जाती है – बाइबल यह कहती है कि ''परमेश्वर ने इस जगत से इतना प्रेम किया कि अपना इकलौता बेटा दे दिया कि जो उस पर विश्वास करेगा, वह नाश नहीं होगा परन्तु अनन्त जीवन पायेगा।

आप परमेश्वर के इन वचनों को निरन्तर अपने मुख से बोलिये, हृदय से मानिये और अपने पर जादू–टोने करने वाले को क्षमा कर दीजिए तो आश्चर्यकर्म हो जायेगा, परन्तु इसमें समय लग सकता है।

**''बाइबल की आयतें, आपके उच्चारण के और स्वतंत्रता के लिए''**

1. **गिनती 23 : 18 –** ''परमेश्वर कोई मनुष्य नहीं है कि वह झूठ बोले और न ही वह मनुष्य का पुत्र है कि गलती करके प्रायश्चित करे, उसने कहा है और वह करेगा, देखो मैंने आशीर्वाद करने की आज्ञा पायी है, उसने आशीर्वाद दिया है और वह इसको बदल नहीं सकता, उसने जैकब में पाप नहीं देखा है और उसने इसराइल में दुष्टता नहीं पायी है, प्रभु उसका परमेश्वर उसके साथ है, परमेश्वर उसको मिस्त्र से निकाल कर लाया है और उसमें एक जंगली बैल की तरह शक्ति है। उसके विरुद्ध न कोई जादू–टोना कामयाब होगा और न ही उसके नाश करने की भविष्यवाणी पूरी होगी।''
2. **मत्ती 8 : 16 –** ''जब शाम हुई तो वह उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्ट–आत्माएं थीं और उसने परमेश्वर के वचन के आधार पर दुष्ट–आत्माओं को निकाला और उन सब को चंगा किया जो बीमार थे। जिससे वह परिपूर्ण हो जो यशायह की पुस्तक में लिखा है– ''उसने हमारी

सब कमजोरियों को अपने ऊपर ले लिया और हमारी बीमारियों को अपने ऊपर ले लिया''

3. **2 तिमुथियुस 1 : 7 –** ''परमेश्वर ने हमको भय की आत्मा नहीं दी परन्तु सामर्थ्य, प्रेम और स्वस्थ मस्तिष्क की आत्मा दी है''।

   **यशायाह 9 : 6–7 –** ''हमको एक बच्चा दिया गया है, हमें एक पुत्र दिया गया है, उसके कंधों पर सरकार को बोझ होगा और उसका नाम होगा, आश्चर्यकर्म करने वाला, अभूतपूर्व सलाहकार, शक्तिशाली परमेश्वर, हमेशा के लिए पिता, शान्ति का राजकुमार और उसकी सत्ता और शान्ति का कभी अन्त नहीं होगा।''

4. **प्रेरितों के काम 3 : 13–16 –** ''अब्राहम आइसक और याकूब के परमेश्वर जो हमारे पूर्वजों का परमेश्वर था, ने अपने बेटे यशुआ को महिमा दी जिसे आपने रोमन साम्राज्य को सौंप दिया और पीलातुस के सामने उसका तिरस्कार किया जबकि वह यशु को छोड़ना चाहता था –

   ''तुमने पवित्र और न्यायी का तिरस्कार किया और उसके स्थान पर खूनी की रिहाई के लिए अपील की। तुमने शान्ति के राजकुमार को मार दिया जिसको परमेश्वर ने मुर्दों से जीवित कर दिया, जिसके हम सब गवाह हैं।''

5. **मत्ती 9 : 32–33 –** ''और जब वह गये तो देखो उसके पास वह ऐसे व्यक्ति को लाये जो गूंगा और दुष्ट–आत्माओं से ग्रसित था।''

   ''और जब दुष्ट–आत्मा उसमें से निकल गयी तो गूंगा बोलने लग गया और सब लोग आश्चर्यचकित हो गये और कहने लगे, ऐसा कभी भी इसराइल में हमने पहले नहीं देखा।''

6. **मत्ती 17 : 17–18 –** ''और जब वह भीड़ की तरफ आये तो एक व्यक्ति उसके आगे झुक कर विनती करने लगा– हे प्रभु मेरे बेटे पर दया करो,

क्योंकि उसको मिरगी का दौरा पड़ता है और बहुत पीड़ा में है और वह कई बार आग और पानी में जाकर गिर जाता है,.....

और यशु ने उस दुष्ट–आत्मा को झिड़का और वह उसमें से निकल आयी और वह बच्चा उसी क्षण से चंगा हो गया।

7. **मत्ती 8 : 28–31** – ''जब वह दूसरे तरफ आया जहां गेरेगसनस के गांव थे, उसे दो दुष्ट–आत्माएं से ग्रसित व्यक्ति मिले जो कबरों की तरफ से आ रहे थे, वह बहुत ताकतवर थे जिससे उनके रास्ते से कोई नहीं निकलता था –

और वह अचानक जोर से जोर से बोलने लग गये, ''यशु हमें तेरे से क्या लेना, हे परमेश्वर के पुत्र, क्या आप हमें समय से पहले दुख देने आये हो'' और वहां से कुछ ही दूर कुछ सुअरों का झुंड चर रहा था। उन दुष्ट–आत्माओं ने यिशु से यह भीख मांगी, कृपा करके हमें सुअरों में जाने दो –

और यिशु ने कहा– ''जाओ'' और जब वह उन 2 व्यक्तियों में से निकल आयी तो उन सुअरों को झुंडों में चली गयी और अचानक सुअर के झुंड तेजी के साथ गहरे समुद्र की ओर दौड़े और पानी में डूब गये।

8. **लूका 4 : 32–33** – ''और वह उसकी शिक्षा पर आश्चर्यचकित थे, क्योंकि उसका वचन अधिकार के साथ था। अब वहां अराधानालय में एक व्यक्ति था जिसके अन्दर अशुद्ध आत्मा थी और वह ऊँची आवाज़ में चिल्लाया और यह कहने लगा, हमें अकेला छोड़ दो, हमें तुम से क्या लेना, क्या आप हमको नाश करने आये हैं। हम जानते हैं कि आप कौन हैं, ''परमेश्वर के चुने हुए पवित्र'' परन्तु यिशु ने उसे कहा, ''चुप हो जा और निकल आ'' और जब दुष्ट–आत्मा उसमें से बाहर निकल गयी और उसने उसे और चोट नहीं पहुंचायी, तब वह सब यह देखकर आश्चर्यचकित हो गये

और एक–दूसरे से कहने लगे– 'यह कैसा शब्द बोलता है, वह अपने अधिकार का प्रयोग करके दुष्ट–आत्माओं को आज्ञा देता है और वह उसमें से निकल जाती हैं।'

9. **लूका 4 : 18–19** – ''परमेश्वर की आत्मा मेरे ऊपर है, क्योंकि उसने मुझ पर अभिषेक किया है, गरीबों को सुसमचार सुनाने के लिए, टूटे दिलों के घावों को बांधने के लिए, बन्दीयों के लिए स्वतंत्रता का ऐलान करने के लिए, अंधों की आंखों में रोशनी लाने के लिए, पीसे हुए के लिए आज़ादी लाने के लिए और परमेश्वर के चुने हुए वर्ष का ऐलान करने के लिए भेजा है।''

10. **1 कुरिन्थियों 2 : 16** – ''किसने यिशु मसीह के विचारों को जाना है कि वह उसे सिखा सके, परन्तु हमारे अन्दर यिशु की विचारधारा है।''

11. **1 यूहन्ना 3 : 8** – ''इसलिए परमेश्वर का पुत्र इस धरती पर आया कि वह शैतान के कामों का नाश कर सके।''

12. **गलातीयों 3 : 13** – ''यशु मसीह ने हमें व्यवस्था के शाप से मुक्त कर दिया है और वह हमारे लिए शाप बना, क्योंकि यह लिखा, शापित है वह व्यक्ति जो क्रुस पर गया। जिससे अब्राहम के आशीर्वाद हमारे पास आ जाये तो हम जो अन्य जातियों से हैं और विश्वास के द्वारा प्रभु के वायदों को हासिल कर सकें।

# ''शापो से मुक्ति''

## ''झूठा मुकदमा, आर्थिक शोषण, अत्याचार''

1. **यशायाह 49 : 24–26** – ''एक ताकतवर मनुष्य के हाथ से शिकार होने से कौन बचा सकता है, और क्रूर अत्याचारी के हाथ उसके बन्दी को कैसे छुड़ा सकते हैं ? परन्तु प्रभु कहता है कि बहुत शक्तिशाली और बहुत भयानक मनुष्य के हाथ से भी स्वतंत्र हो जायेंगे। मैं उन लोगों से युद्ध करूंगा जो तुझसे लड़ते हैं और मैं तेरे बच्चों को बचाऊँगा।''
2. **यशायाह 51 : 10–11** – ''क्या आप वही परमेश्वर नहीं हैं जो शक्तिशाली है, और जिन्होंने लाल समुद्र को सुखाया है जिससे तेरे बचे हुओं के लिए रास्ता बने। वह समय आ रहा है जब परमेश्वर के बचे हुए अपने घर वापस आयेंगे, और वह गाते और बजाते हुए यरूशलैम की तरफ आयेंगे और आनन्द, और हमेशा की प्रसन्नता उनका अंश होगी, दुख और तकलीफ हमेशा के लिए चली जायेगी।
3. **यशायाह 54 : 17** – ''आने वाले दिनों में तेरे विरुद्ध कोई भी हथियार सफल नहीं होगा और कचहरी में तेरे विरुद्ध बोले झूठ के विपरीत मुझे न्याय मिलेगा। यह परमेश्वर के भक्त की धरोहर है। यह आशीर्वाद मैंने तुझे दिया है, जो परमेश्वर है और यह उसकी वाणी है।''
4. **इफ़िसियों 6 : 5–9** – ''नौकरों आप उनका कहना मानो जो आपके मालिक हों, आपके हृदय में भय और कांपना रहे उसी तरह से जैसे आप सत्यता के अनुसार मसीह का अनुसरण करते हो, और आप जो मालिक या प्रबन्धक हैं अपने सेवकों को धमकी मत दो क्योंकि आपका मालिक या प्रबन्धक स्वर्ग में उपस्थित परमेश्वर है, जो किसी का पक्षपात नहीं करता– नितिवचन 15 : 27

5. बेईमानी से कमाया हुआ पैसा पूरे परिवार के लिए दुख का कारण बनता है और रिश्वत से घृणा करना खुशी लाता है – नितिवचन 16 : 8

6. थोड़ा सा धन जो ईमानदारी से कमाया गया है, उस अमीरी से कई गुना अच्छा है जो बेईमानी से एकत्रित किया गया है – नितिवचन 20 : 21–23

7. नितिवचन 21 : 16 – वह जो अपने धन को गरीब का शोषण करके बढ़ाता है और धनी को रिश्वत देता है, गरीबी को अन्त में देखेगा।

8. नितिवचन 27 : 22 – जल्दी में कमाया धन बुरा होता है और आपको गरीब बना देता है।

9. नितिवचन 10 : 2 – दुष्टता से कमाया हुआ धन किसी काम नहीं आयेगा, परन्तु पवित्रता हमें मृत्यु से बचायेगी।

10. नितिवचन 24 : 23–25 – गरीब आदमी को दोष लगाना और धनी को गलत होने के बावजूद भी छोड़ देना गलत है, वह जो दुष्ट को यह कहता है कि तुम निर्दोष हो, विभिन्न देशों के लोगों के द्वारा शापित किया जायेगा। वह जो पाप को बिना किसी के भय के खोलते हैं, परमेश्वर का आशीर्वाद उन पर आयेगा।

11. नितिवचन 12 : 11 – बेईमानी के द्वारा कमाया हुआ धन बहुत जल्दी समाप्त हो जायेगा, परन्तु मेहनत के द्वारा कमाया धन बढ़ता रहेगा।

12. याकूब 5 : 4 – उन लोगों की पुकार जिनको तुमने रोजगार दिया है, और पूरी तन्ख्वाह नहीं दी है, सेनाओं के परमेश्वर के कानों में पहुंच चुकी है।

13. भजनसंहिता 33 : 18–19 – ''देखो, परमेश्वर की आंखें उन लोगों पर लगी रहती हैं जो उससे डरते हैं और उसकी करुणा पर भरोसा रखते हैं, वह उनको मौत के मुंह से निकालेगा और अकाल में भी तृप्त करेगा।

14. नितिवचन 20 : 21–23 – ''जो संपत्ति आरम्भ में जल्दी से हासिल की जाती है, वह अन्त में आशीर्वाद नहीं साबित होगी, यह मत कहो कि मैं

बदला लूँगा, परमेश्वर की प्रतीक्षा करो और वह आपको बचायेंगे। गलत तौल परमेश्वर की दृष्टि में क्रोध का कारण है, और बेईमानी का तराजू अच्छा नहीं है।''

15. नितिवचन 29 : 4 – ''सही प्रशासक अपने देश को न्याय के द्वारा स्थिर करता है, परन्तु जो रिश्वत लेते हैं, वह अराजकता को जन्म देते हैं।''

''इसके अतिरिक्त आप बाइबल का अध्ययन करके परमेश्वर के और वायदों को दृढ़ कर सकते हैं जिनका उपयोग आप अपनी परिस्थितियों को बदलने के लिए कर सकते हैं।''

# ''शापो से मुक्ति''

## ''सूनापन, निराशा, चिन्ता, भय और भविष्य का डर''

1. **2 तीमुथियुस 1 : 7** – ''हमें परमेश्वर ने भय की आत्मा नहीं दी, वरन सामर्थ्य, प्रेम और स्वस्थ मस्तिष्क की आत्मा दी है।''
2. **प्रकाशितवाक्य 21 : 8** – ''वह जो विजय प्राप्त करता है, हर वस्तु को पायेगा। मैं उसका परमेश्वर होऊँगा और वह मेरा बेटा होगा परन्तु डरपोक, अविश्वासी, घृण करने वाले, खूनी, व्यभिचारी, जादू–टोना करने वाले, मूर्तिपूजक और झूठों का भाग उस झील में होगा जहां आग और गन्धक हैं और यह दूसरी मृत्यु होगी।''
3. **व्यवस्थाविवरण 3 : 22** – ''तुम उन से डरना नहीं क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा प्रभु लगातार तुम्हारे लिए युद्ध करता है।''
4. **इब्रानियों 13 : 6** – ''परमेश्वर मेरा सहायक है, मुझे किसी भी चीज़ से डरने की आवश्यकता नहीं होगी, मनुष्य मेरा क्या बिगाड़ सकता है।''
5. **फिलिप्पियों 4 : 6** – ''किसी भी बात की चिन्ता मत करो, परन्तु हर एक परिस्थिति में प्रार्थना और निवेदन करते हुए धन्यवाद के साथ अपनी सारी विनतियां परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत करो।''
6. **नीतिवचन 18 : 21** – ''मृत्यु और जीवन हमारी जीभ (जबान) के ऊपर आधारित है, जो जीवन को प्रेम करेंगे, वह निश्चय की इसका फल खायेंगे।
7. **भजनसंहिता 118 : 17–18** – ''मै मरूंगा नहीं वरन जीऊँगा और परमेश्वर के आश्चर्यकर्मो का वर्णन करूंगा।
8. **भजनसंहिता 91 : 14–16** – ''क्योंकि वह (परमेश्वर) मुझे प्रेम करता है, इसलिए वह मुझे छुड़ाएगा, वह मुझे ऊँचा उठायेगा क्योंकि मैंने उसके नाम

को जाना है, मैं उसे पुकारूंगा और वह मुझे उत्तर देगा। वह मेरे साथ संकट में होगा, वह मुझे छुटकारा देगा और मेरा सम्मान करेगा। वह मुझे लम्बी उमर से सन्तुष्ट करेगा और मुझे मुक्ति का मार्ग दिखायेगा।

9. **भजनसंहिता 103 : 2–4** – ''हे मेरे मन यहोवा की धन्य कहो और उसके उपकारों को मत भूलो जो हमारे सब पापों को क्षमा करता है और हमारी हर बीमारी को चंगा करता है, वह हमारे जीवन को हर विनाश से बचाता है और हम पर करुणा और दया करता है और हमारे मुख को अच्छी वस्तुओं से तृप्त करता है जिससे हमारी जवानी उकाब की तरह नयी हो जाती है।

10. **विलाप गीत 3 : 22–24** – ''परमेश्वर की करुणा के कारण हम लोग नाश नहीं होंगे क्योंकि उसकी दया समाप्त नहीं होती, वह प्रतिदिन सुबह नये तरह से उपलब्ध है। तेरी विश्वसनीयता बहुत अधिक है, परमेश्वर मेरा हिस्सा है, इसलिए मैं उस पर आशा करूंगा।

11. **भजनसंहिता 33 : 18–19** – ''देखो परमेश्वर की आंखें निरन्तर उन पर लगी रहती हैं, जो उससे डरते हैं और उसकी करुणा पर भरोसा रखते हैं, वह उनको मृत्यु से बचाता है और अकाल के समय भी जिंदा रखता है।

12. **यिर्मयाह 29 : 11** – ''मैं जानता हूँ कि मेरे आपके प्रति क्या विचार है, शान्ति के बारे ना कि बुराई के बारे में। मेरी योजना तुम्हें भविष्य और आशा देने के बारे में है, फिर आप मुझे पुकारोगे और मेरे को प्रार्थना करोगे और मैं उसका उत्तर दूंगा।

13. **2 इतिहास 20 : 20** – ''सुनो मेरी बात हे यहुदा और यरूशलैम के निवासियों, परमेश्वर में विश्वास करो और तुम स्थिर हो जाओगे, उसके भविष्यकर्ताओं की बातों को सुनो और मानो, और तुम सफलता प्राप्त करोगे।

14. **इब्रानियों 13 : 8** – ''यशु मसीह जैसा कल था, वैसा ही आज भी है और हमेशा के लिए वैसा ही रहेगा।

15. **इब्रानियों 13 : 6** – ''परमेश्वर मेरा सहायक है, मुझे किसी भी बात का भय नहीं है, मनुष्य मेरा क्या कर सकता है।

16. **प्रकाशितवाक्य 15 : 3–4** – ''महान और आश्चर्यचकित हैं तेरे काम, सर्वशक्तिशाली परमेश्वर तेरे मार्ग न्याय और सत्य से भरे हैं, हे सन्तों के राजा, तेरे से कौन नहीं डरेगा और तुझे महिमा देगा, क्योंकि केवल आप ही पवित्र हो, सारे देश आपकी तरफ आयेंगे और आपकी उपासना करेंगे, क्योंकि आपकी विधियां सब तरफ दर्शनीय हैं।

# ''शापो से मुक्ति''

## ''नशा, निराशा और अपंगता''

''**नीतिवचन 20 : 1** – ''शराब आपका उपहास करती है और शक्तिशाली नशे की सामग्री उपद्रव कराती है और जो कोई भी इसके द्वारा प्रभावित होता है वह बुद्धिमान नहीं कहा जाता।''

''**यशायाह 1 : 19–20** – ''अगर तुम समर्पण करोगे और आज्ञा मानोगे तो तुम धरती का अच्छा फल खाओगे, परन्तु अगर तुम कहना नहीं मानोगे और विद्रोह करोगे तो तुम्हारा अन्त तलवार के द्वारा होगा। यह वचन परमेश्वर के मुख से निकले है।''

''**नीतिवचन 13 : 12–14** – ''आशा का पूरा ना होना हृदय को बीमार कर देता है, परन्तु जब इच्छा पूरी हो जाती है तो वह एक जीवन के वृक्ष के समान होती है। जो परमेश्वर के वचन का तिरस्कार करेगा नाश हो जायेगा परन्तु जो उसकी आज्ञाओं से डरेगा वह पुरस्कार को पायेगा। बुद्धिमान की शिक्षा जीवन का स्रोत है और वह हमें मौत के फंदे से बचाती है।

''**नीतिवचन 18–21** – ''मृत्यु और जीवन जीभ (जबान) के उपयोग करने को सामर्थ्य से प्रभावित होते हैं। जो उसको प्रेम करेंगे वह उसका फल खायेंगे।

''**यशायाह 56–13** – ''परन्तु वह जो मुझमें विश्वास करेगा, सफलता को पायेगा और मेरे पवित्र पर्वत को प्राप्त करेगा।

''**यशायाह 65–21** – ''वह मकान बनायेंगे और उनमें रहेंगे, वह अंगूर के बाग को लगायेंगे और उसका फल खायेंगे, वह घर बनायेंगे और दूसरा उसमें नहीं रहेगा – जैसे पेड़ इस धरती पर बहुत देर से रहता है, उस तरह मेरे लोगों की लम्बी

आयु होगी, मेरे चुने हुए बहुत अधिक समय तक अपने परिश्रम के फल को खायेंगे।

**''रोमियों 15–13** – ''और अब आशा का परमेश्वर तुम्हें आनन्द और शान्ति से विश्वास करने के लिए भरे, जिससे तुम्हारे अन्दर पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से आशा की बहुतायत उपलब्ध हो।

**''मरकुस 2 : 10–12** – ''जिससे तुम यह जान लो कि परमेश्वर के पुत्र को इस धरती पर पाप क्षमा करने का अधिकार है, इसलिए उसने अपंग से कहा, उठ अपना बिस्तर उठा और चलना शुरू कर दे, और तुरन्त उसने बिस्तर उठाया और सबकी उपस्थिति में उठकर चला गया और सब लोग यह देखकर चकित हो गये और परमेश्वर की महिमा करने लगे तथा कहने लगे, हमने तो ऐसा कभी नहीं देखा।

**''प्रेरितों के काम 3 : 6** – ''तब पतरस ने कहा, ''सोना और चांदी तो मेरे पास नहीं है, परन्तु जो मेरे पास है वह मैं तुझे देने जा रहा हूँ, यशु नाजरी के नाम से उठ और चलने लग जा। और पतरस ने उसको सीधे हाथ से पकड़ा और उठाया और तुरन्त उसके पैर और टखने की हड्डी में शक्ति आ गयी। तो वह खड़ा हुआ, और मन्दिर में चलता, आनन्द मनाता हुआ गया और प्रभु की प्रशंसा करने लगा।

**''जकर्याह 4 : 8** – ''यह परमेश्वर का वचन जरूबावेल के लिए है, अपनी सामर्थ्य या शक्ति से नहीं, वरन मेरी आत्मा के द्वारा, सेनाओं का परमेश्वर यूं कहता है, जरूबावेल के सामने वह पर्वत समतल हो जायेगा और वह उसे मुख्य पत्थर बनायेंगे और ऊँचे स्वर में पुकारेगा, अनुग्रह, अनुग्रह इसे अनुग्रह मिले।

**''यशायाह 51 : 9–11** – ''उठ खड़ी हो, पूरी ताकत से भर जा, परमेश्वर की यह भुजा, उठ जैसे प्राचीन काल में और हमारे पूर्वजों के समय में, जिस तरह से

तुम्हें रहाब को अपनी भुजा से काट दिया था और सांप को घायल कर दिया था, क्या आप वह नहीं हो जिसने समुद्र को सुखा दिया था जो गहरे पानी को भी सूखा दिया, और समुद्र की गहराई को सड़क बना दिया जिससे तेरे चुने हुए समुद्र को पार कर सके। इसलिए परमेश्वर के बचाये हुए वापस आयेंगे और वह सियोन में गाते हुए आयेंगे और उनके हृदय में निरन्तर आनन्द होगा और हर एक दुख और कराहना समाप्त हो जायेगा।''

''**फिलिप्पियों 4 : 6 –** ''परमेश्वर की शान्ति जो हर समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और मस्तिष्क को पूरी तरह से सुरक्षित रखेगी।

''**इब्रानीयों 11–16** – ''बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है, क्योंकि जो कुछ उसके पास आता है उसे यह विश्वास करना चाहिए कि वह है और वह उन लोगों को इनाम (पुरस्कार) देता है जो उसको खोजते हैं।

# ''शापो से मुक्ति''

## ''असहाय, असंभव और आशारहित परिस्थितियाँ''

''**लूका 1 : 36 –** ''परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

''**यिर्मयाह 31 : 17 –** ''ओह परमेश्वर ! देखो आपने आकाश और धरती अपनी महानशक्ति और शक्तिशाली हाथो से बनाया है क्या तेरे लिए कुछ मुश्किल है ?

''**यशायाह 25 : 6–8** – ''और उस पर्वत पर सेनाओं का परमेश्वर हर जाति के लिए एक अच्छा भोजन देगा, बढ़िया पेय पदार्थ और उत्तम खाना और पीना और वह सब अंधेरा जो लोगों पर और वह परदा जो उन पर पड़ा है दूर हो जायेगा और वह हमेशा के लिए मृत्यु का नाश कर देगा और हर चेहरे पर जो आँसू है, पोछ डालेगा और जो लोगों पर तरह–तरह के शाप हैं, वह समाप्त हो जायेंगे।''

''**1 कुरिन्थियों 2 : 9 –** ''आंखों ने नहीं देखा और न ही कानों ने सुना है, वह सब जो परमेश्वर ने उन लोगों के लिए तैयार किया है जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं।''

''**यहेजकेल 36 : 34–36** – ''बंजर जमीन को जोता जायेगा बजाय इसके कि वह सुनसान पड़ी रहे और आने–जाने वाले कहेंगे कि यह जमीन उजाड़ थी परन्तु अब यह अदन का बाग बन गई है और यह उजाड़, सुनसान और खंडहर थी, पर अब बस गयी है और सुरक्षित है।''

''**विलापगीत 3 : 22–24 –** ''परमेश्वर की दया की वजह से हम नाश नहीं होंगे क्योंकि उसकी करुणा कभी समाप्त नहीं होती, वह प्रतिदिन नयी है, तेरी विश्वसनीयता बहुत अधिक है। परमेश्वर मेरे जीवन का भाग है, इसलिए मैं उस पर आशा रखूंगा। परमेश्वर उन लोगों के प्रति भला है जो उस पर विश्वास करते हैं – उन सब के लिए जो उसे ढूंढते हैं, जो उसकी मुक्ति की प्रतीक्षा

करते हैं, यह अच्छी बात है कि मनुष्य परमेश्वर के छुटकारे के लिए आशा और प्रतीक्षा करे।''

**''यिर्मयाह 46 : 26 – 28 –** ''मेरे सेवक याकूब तू डर मत। और न ही परेशान हो, ओ इसराइल, मैं तुझे दूर के स्थान से बचाऊँगा और तेरी सन्तान को तेरी बन्धुआई के स्थान से, याकूब वापस आयेगा, विश्राम करेगा और आराम से रहेगा, और उसको कोई भी डराने नहीं पायेगा। डर मत हे याकूब मेरे सेवक, परमेश्वर यूं कहता है – मैं तेरे साथ हूँ।''

**''2 तीमुथीयुस 1 : 7 –** ''परमेश्वर ने हमें भय की आत्मा नहीं दी है, वरन सामर्थ्य, प्रेम और स्वस्थ मस्तिष्क की आत्मा दी है।''

**''रोमियों 8 : 14–15 –** ''जो परमेश्वर की आत्मा के द्वारा चलाये जाते हैं, वह परमेश्वर की सन्तान होते हैं, परन्तु आपने अंगीकार करने की आत्मा को पाया है जिससे हम चिल्लाते हैं पिता, परमेश्वर।

**''भजनसंहिता 91 : 14–16** – ''क्योंकि उसने मेरे से प्रेम किया है इसलिए मैं उसे छुटकारा दूंगा, मैं उसे ऊँचे स्थान पर रखूंगा क्योंकि उसने मेरे नाम को जाना है – वह मेरे को पुकारेगा और मैं उसे उत्तर दूंगा। मैं उसके साथ संकट में रहूंगा। मैं उसे छुटकारा दिलाऊँगा और उसका सम्मान करूंगा, मैं उसको लम्बी उमर से तृप्त करूंगा और अपनी मुक्ति को दिखाऊँगा।

**''भजनसंहिता 118 : 17–18** – ''मैं मरूंगा नहीं, वरन जीवित रहूँगा, और परमेश्वर के कामों का वर्णन करूंगा।

**''भजनसंहिता 118 : 8–9** – ''क्योंकि आपने मेरी आत्मा को मौत से बचाया, मेरी आंखों को आंसुओं से और मेरे पैरों को गिरने से, इसलिए मैं परमेश्वर के सामने जीवित मनुष्यों के देश में चलूँगा।''